टिप्पणी

22

रामधारी सिंह 'दिनकर'

रामधारी सिंह 'दिनकर' का नाम तो आपने सुना ही होगा। उनकी कुछ कविताएँ भी पढ़ी होंगी। *'हठ कर बैठा चाँद एक दिन माता से यह बोला, सिलवा दे माँ मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला'* कविता शायद आपने पढ़ी हो। यह इन्हीं की लिखी कविता है। सन् 1962 में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया था और उसमें हमारे देश की पराजय हुई थी, तो दिनकर का मन दुख से भर उठा। दिनकर राष्ट्रवादी कवि हैं। इस पराजय के लिए उन्होंने देश के राजनीतिक नेतृत्व को ज़िम्मेदार माना और 'परशुराम की प्रतीक्षा' शीर्षक से एक लंबी कविता की रचना की। इस पाठ में इसी कविता के कुछ चुने हुए अंश आप 'परशुराम के उपदेश' शीर्षक से पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कविता में निहित दर्शन और विचारों की सराहना कर सकेंगे;
- कविता में निहित उमंग, उत्साह, वीरता, स्वाभिमान, स्वतंत्रता, संस्कृति के प्रति प्रेम जैसे गुणों को पहचान कर उन पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- राष्ट्रवाद का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- कविता में प्रयुक्त लाक्षणिक प्रयोगों और प्रतीकों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- कवि की ओजपूर्ण और दार्शनिक भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

वर्तमान युग में विनम्र, संतोषी और वैरागी बने रहकर अपने देश तथा स्वाधीनता की सुरक्षा हम नहीं कर सकते। हमें शक्तिशाली और निडर होकर तथा जान हथेली पर रखकर शत्रु का सामना करना होगा। सबल हाथों में ही राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है। 'दिनकर' ने अपने 'कुरुक्षेत्र' प्रबंध काव्य में लिखा है–

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन, विषरहित, विनीत सरल हो?

इसी प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी आदि सुप्रसिद्ध कवियों ने भी भारतवासियों में राष्ट्रीय-भावना विकसित करने वाली कविताएँ लिखी हैं। आप उन्हीं में से किसी एक कविता की कुछ पंक्तियाँ यहाँ लिखिए–

....

....

....

....

....

22.1 मूलपाठ

अब आप इस कविता को तीन-चार बार ओजपूर्ण स्वर में पढ़ जाइए–

परशुराम के उपदेश

(i)

सिखलायेगा वह, ऋत एक ही अनल है,
जिंदगी नहीं वह, जहाँ नहीं हलचल है।
जिनमें दाहकता नहीं, न तो गर्जन है,
सुख की तरंग का जहाँ अंध वर्जन है,
जो सत्य राख में सने, रुक्ष, रूठे हैं
छोड़ो उन को, वे सही नहीं, झूठे हैं।

(ii)

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे!

*** *** ***

शब्दार्थ

ऋत – सत्य
अनल – आग
दाहक – जलाने वाला
वर्जन – मनाही
रुक्ष – रूखा, नीरस, कठोर
विभा – चमक, कांति
पीयूष – अम त, दूध
तुंग – ऊँचा
शैल-शिखर – पर्वत की चोटी
सोम – अम त

(iii)

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।
दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

(iv)

स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे!
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे!

(v)

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं,
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।
पकड़ो अयाल, अन्धड़ पर उछल चढ़ो रे!
किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे!

*** *** ***

(vi)

स्वर में पावक यदि नहीं, वृथा वन्दन है,
वीरता नहीं, तो सभी विनय क्रन्दन है।
सिर पर जिसके असिघात, रक्त-चन्दन है,
भ्रामरी उसी का करती अभिनन्दन है।
दानवी रक्त से सभी पाप धुलते हैं,
ऊँची मनुष्यता के पथ भी खुलते हैं।

टिप्पणी

शब्दार्थ

आन	– शान
अनय	– अन्याय, अनीति
व्योम	– आकाश
अशनि-घात	– वज्र के समान कठोर चोट
संगीन	– नुकीला हथियार जो बंदूक के आगे लगाया जाता है।
शोणित	– खून
अयाल	– सिंह की गर्दन के बाल
किरिच	– छोटी बरछी, पेट में घोंपी जाने वाली तलवार या कटार
चाम	– चमड़ी, त्वचा, खाल
पावक	– अग्नि
वृथा	– व्यर्थ
क्रंदन	– रोने की आवाज़
असिघात	– तलवार का घाव
भ्रामरी	– भवानी, पार्वती, दुर्गा

22.2 बोध प्रश्न

1. कवि ने किस प्रकार के जीवन को जीवंत माना है?
2. कैसे सच को कवि झूठा बता रहा है?

3. स्वातंत्र्य को व्यक्ति का भीतरी गुण क्यों कहा गया है?
4. भ्रामरी कैसे व्यक्ति का स्वागत करती है?

22.3 आइए समझें

परशुराम के उपदेश

प्रसंग

भारत पर चीन के आक्रमण के पश्चात् कवि ने देशवासियों को संबोधित करते हुए इस कविता की रचना की है। विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से कवि देशवासियों में उमंग और उत्साह भरते हुए वीरता का भाव जगाना चाहता है।

व्याख्या - 1

कविता का प्रथम छंद एक बार फिर पढ़ लीजिए:

सिखलायेगा वह,
ऋत एक ही अनल है,

जिंदगी नहीं वह,
जहाँ नहीं हलचल है।
जिनमें दाहकता नहीं,
न तो गर्जन है,

सुख की तरंग का
जहाँ अंध वर्जन है,
जो सत्य राख में सने,

रुक्ष, रूठे हैं
छोड़ो उनको, वे सही नहीं, झूठे हैं।

कवि कहता है कि मानव में एक विशेष प्रकार की अग्नि है, जो शक्ति रूप में छिपी पड़ी है। वही उसके जीवन का सत्य है। कवि उसी सत्य को खोजने के लिए मनुष्य को प्रेरित करता है। सत्य वहीं है, जहाँ जीवन में हलचल है अर्थात् जीवन में गतिशीलता और क्रियाशीलता है। यहाँ क्रियाशीलता जीवन को गति देती है। किंतु यह क्रियाशीलता एक नियमित ढर्रे पर चलने वाली क्रिया नहीं बल्कि नित नई घटनाओं, नए विचारों से प्रेरित होकर नए कार्यों की ओर बढ़ने वाली क्रियाशीलता है। इसी को कवि ने हलचल कहा है।

कवि के अनुसार ऐसी हलचल के बिना कोई ज़िंदगी नहीं। इसी प्रकार वह जीवन भी व्यर्थ है जिसमें 'दाहकता और गर्जन' न हो। यहाँ 'गर्जन' का अर्थ दो विरोधी परिस्थितियों या विचारों की टकराहट से हृदय में उत्पन्न दाहकता या जलन है।

इसका परिणाम होता है कि हम गरज उठते हैं। इसको हम इस रेखाचित्र से समझने की चेष्टा करते हैं–

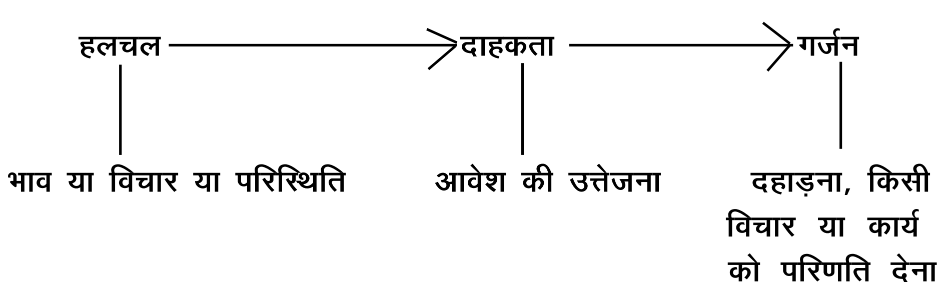

कहने का तात्पर्य यह है कि हलचल, दाहकता और गर्जन ये तीनों ही वीरता के लक्षण हैं और यह जीवन का सत्य भी है। इस प्रकार की ज़िंदगी सुखों की ओर आकर्षित नहीं होती, सुख की सेज वहाँ वर्जित है। इस प्रकार सुख-सुविधापूर्ण जीवन और हलचल-पूर्ण जीवन एक दूसरे से भिन्न है।

आइए अब, प्रथम छंद की अंतिम पंक्ति का आशय जानें–

यहाँ कवि उसी सत्य रूपी शक्ति को ढूँढ़ लाने के लिए प्रेरित करता हुआ कहता है कि जिन लोगों ने झूठ रूपी राख से सत्य रूपी अग्निशक्ति को ढक दिया है। भारत-चीनी भाई-भाई के नारे को झूठा कहते हुए कवि का आक्रोश व्यक्त हुआ है। इस नारे की आड़ में चीन हमारे देश पर घात कर रहा है। उन पर विश्वास मत करो, वे झूठे हैं। ऐ देशवासियो! तुम सत्य को पहचानो और अपने जीवन की दिशा को बदलो।

टिप्पणी

(क) 'हलचल न होना' से तात्पर्य है– 'भावना–विहीन', 'क्रिया–विहीन' होना। इस शब्द द्वारा कवि कहना चाहता है कि हमारे अंदर प्रतिस्पर्धा और प्रतिशोध की भावना भी आवश्यक है, वरना हमें कोई भी, किसी भी स्थिति में, कुछ भी कहता और सताता चला जाएगा। अतः हमारे भीतर प्रतिकार की भावना भी होनी चाहिए।

(ख) 'दाहकता और गर्जन' हमारी भावनात्मक प्रतिस्पर्धा और प्रतिशोध को बढ़ावा देने वाली वृत्तियाँ और कर्म हैं। जब तक हमें घनीभूत पीड़ा का अनुभव नहीं होता (इसे कवि ने दाहकता कहा है), तब तक हम गर्जन के लिए तत्पर नहीं होते।

(ग) गर्जन एक प्रकार की प्रतिक्रिया है, इससे सामने वाले को जताना होता है कि आपकी बात या कार्य मुझे पसंद नहीं। ऐसी स्थिति में सामने वाले से 'न' या 'नहीं' कहना ही उचित होता है, बाद में पछतावा करने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

(घ) 'सुख की तरंग' संकेत है–ऐशो–आराम की ज़िंदगी। 'अंध वर्जन' से तात्पर्य है कि इसकी एक किरण या परछाईं भी अंदर घुस नहीं सकती अर्थात् जो व्यक्ति प्रतिशोध में भरकर गर्जन करता है, वह ऐशो-आराम की ज़िंदगी को भूल जाता है।

(ङ) 'सत्य राख में सने' का संकेत उस सत्य की ओर है जो शक्ति रूपी अग्नि के रूप में था किंतु अब झूठ रूपी राख से ढक जाने के कारण उसकी चिंगारी नहीं दिखाई देती।

(च) 'सत्य राख में सने' पंक्ति में रूपक अलंकार है। सत्य रूपी अग्नि शक्ति और झूठ रूपी राख में दबी होने का संकेत है।

पाठगत प्रश्न 22.1

नीचे दिए गए प्रश्नों को ध्यान से पढ़ते हुए उचित विकल्प पर सही (√) का चिह्न लगाइए:

1. 'हलचल' प्रतीक है–

(क) भावनाओं और क्रियाओं का　　(ग) तेज़ बारिश का

(ख) भूकंप का　　(घ) पानी में पत्थर फेंकने का

टिप्पणी

2. मनुष्य में दाहकता तब उभरती है–
   (क) जब बहुत गरमी पड़ती है
   (ख) जब आग लग जाती है
   (ग) जब वह क्रोधित हो जाता है
   (घ) जब वह दुखी होता है

3. 'जो सत्य राख में सने' काव्य पंक्तियों में 'राख' प्रतीक है–
   (क) लकड़ी के बाद शेष वस्तु का
   (ख) जलकर भस्म होने का
   (ग) झूठ का
   (घ) पराजय का

व्याख्या-2

अब आप कविता के दूसरे छंद को ओजपूर्ण स्वर में पढ़कर इसकी व्याख्या पर ध्यान दीजिए–

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे!

कवि का विचार है कि अहिंसा का मार्ग हमें योग और वैराग्य की ओर ले जाता है। इसलिए वह देशवासियों से कहता है– तुम वैराग्य छोड़ो, अपनी भुजाओं की शक्ति को पहचानो अर्थात् अहिंसा का मार्ग छोड़कर, अपनी शक्ति के अनुरूप तलवार और बंदूकें उठाओ और कठिन परिस्थितियों में भी अपना मार्ग खोजो, दुर्गम सीमाओं को पार करो और अपना लक्ष्य प्राप्त करो। ऐ देशवासियो!, योगी नहीं, वरन् विजयी के समान जीना सीखो। 'विजयी के सदृश जियो रे!' पंक्ति में कवि देशवासियों को कर्मठता का प्रतीक बनाना चाहता है, जो जीवन संग्राम में अपने कर्तव्य बल पर सदा विजयी बनें। इस पंक्ति में उपमा अलंकार का सौंदर्य भी दिखाई देता है।

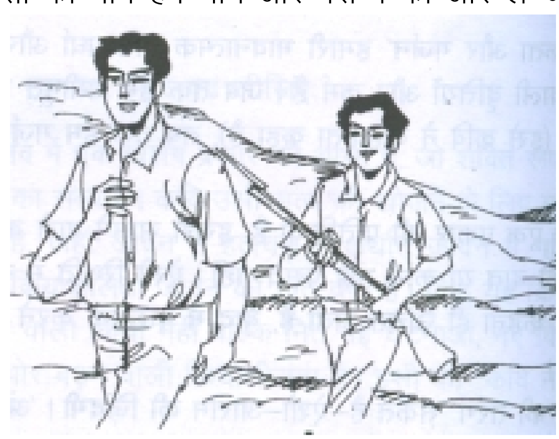

चित्र 22.1

योगी, योग–ध्यान में लीन सांसारिक मोह से दूर चुप बैठा होता है, जबकि वीर विजय की लालसा में कर्तव्य पथ पर चलता हुआ, विजय पताका फहरा कर ही दम लेता है।

कवि यहाँ कहना चाहता है कि योगियों से देश में विकास नहीं होगा, जबकि वीरों से देश विकास की ओर बढ़ेगा। दोनों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

योगी	**विजयी (कर्मवीर)**
योग, ध्यान में लीन	दृढ़ निश्चयी
निर्मोही	निर्भीक
असांसारिक	वीर

अहिंसावादी	उत्साही
कोमल, दयालु	परिश्रमी

लेकिन कवि का तात्पर्य यह नहीं है कि हमेशा लड़ाई-झगड़े करते रहो। अहिंसा को त्यागने पर कवि का बल इसलिए है कि जब शत्रु हमारे ऊपर आक्रमण कर दे, तब भी अहिंसा के दर्शन पर अड़े रहना उचित नहीं होता। कभी-कभी देश की सुरक्षा, राष्ट्र की सुरक्षा के लिए हिंसा आवश्यक बन जाती है।

टिप्पणी

(क) 'बाँहों की विभा' से तात्पर्य है– भुजाओं की शक्ति। कवि यहाँ कहना चाहता है कि प्रत्येक देशवासी अपनी शक्तियों को पहचान कर उनका उपयोग करे।

(ख) 'चट्टानों की छाती से दूध निकालने' का अर्थ है–कठिन और दुर्गम परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेना।

(ग) 'पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो': ऐसा माना जाता है कि शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा से अमृत वर्षा होती है। यहाँ कवि का तात्पर्य है कि चंद्रमा में जो अमृत तत्त्व है, उसे पाने की चेष्टा करो अर्थात् ऊँचे से ऊँचा लक्ष्य बनाकर उसका बहुमूल्य तत्त्व पाने की कोशिश करो।

व्याख्या - 3

अब आप तीसरे छंद को ध्यान से पढ़िए –

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।
दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

कवि देशवासियों को संबोधित करते हुए कहता है कि व्यक्ति को अपनी शान, मान और आन नहीं छोड़नी चाहिए। भले ही देश की रक्षा करते हुए अपना सिर क्यों न कटाना पड़े। वह कहता है कि अन्याय और अनीति के आगे कभी मत झुको, भले ही आकाश क्यों न फट पड़े अर्थात् कितनी भी भारी मुसीबत का पहाड़ तुम पर क्यों न टूटे, मगर अन्याय की बात मत मानो। जीवन में मौत तो एक बार ही आती है–यमराज एक बार ही गर्दन पकड़ कर ले जाते हैं। अतः, जब एक बार ही मरना है तो शान से, निडर होकर मृत्यु की ओर स्वयं बढ़ो–अर्थात् वीरतापूर्वक मृत्यु का वरण करो।

टिप्पणी

1. 'व्योम फट जाए' 'आकाश फट पड़ना' मुहावरे का ही रूपांतरण है। इसका अर्थ है – बहुत सारी मुसीबतें एक साथ आ जाना। पंक्तियों का सौंदर्य यह है कि भले ही आपके सामने मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़े, किंतु अनीति के आगे आप कभी न झुकें।

2. मानव जीवन नश्वर है। जो पैदा हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। यह भी निश्चित है कि मनुष्य जीवन एक बार ही मिलता है और मृत्यु भी एक ही बार आती है। यमराज मृत्यु के देवता माने जाते हैं। इसलिए कवि का संकेत उनकी ओर है कि वे बार–बार गर्दन पकड़ने नहीं आएँगे।

याद कीजिए इतिहास की उस घटना को जब अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया था। पानीपत के मैदान में मराठों के सेनापति इब्राहीम गार्दी से उसका मुकाबला हुआ। इब्राहीम गार्दी को वीरता पूर्वक लड़ते हुए बंदी बनाया गया। अहमदशाह अब्दाली ने उसे बहुत प्रलोभन दिए, किंतु उस देशप्रेमी सेनापति ने शरीर का अंग–अंग काट दिए जाने पर भी उस बादशाह के प्रलोभन को स्वीकार नहीं किया और अपने प्राणों की आहुति दे डाली। ऐसे ही वीरों की आवश्यकता इस समय भी कवि महसूस कर रहा है।

पाठगत प्रश्न 22.2

निम्नलिखित में जो सबसे उचित है उस पर सही (√) का चिह्न लगाइए –

1. 'वैराग्य छोड़ बाहों की विभा सँभालो' पंक्ति में कवि किसे संबोधित कर रहा है:
   (क) देशवासियों को (ग) कर्मवीरों को
   (ख) योगियों को (घ) दुश्मनों को

2. 'है रुकी जहाँ भी धार' प्रतीक है:
   (क) पानी की धारा का
   (ख) मार्ग में आने वाली बाधाओं का
   (ग) नदी की धार के बीच में आई चट्टान का
   (घ) रास्ते में पड़ने वाले तालाब का

3. 'मरण के मुख पर चरण धरो रे' पंक्ति के लिए निम्नलिखित मुहावरों में जो सबसे उचित है, उस पर सही (√) का चिह्न लगाइए –
   (क) ओखली में सिर देना (ग) जान हथेली पर रखना
   (ख) आ बैल मुझे मार (घ) निर्बल के बल राम

व्याख्या - 4

अब आप चौथे छंद की ओर ध्यान दें–

स्वातंत्र्य जाति की लगन,
व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं,
भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो
अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत में
वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत
चरण गहो रे!
जो पड़े आन,
खुद ही सब आग सहो रे!

चित्र 22.2

प्रत्येक प्राणी स्वतंत्र रहना चाहता है। इस चित्र की ओर ध्यान दें –

जब पक्षी भी स्वतंत्र रहना चाहता है तो भला हम मानव स्वतंत्र क्यों नहीं रहना चाहेंगे? इसी भाव को कवि ने इन पंक्तियों में व्यक्त करते हुए कहा है–सभी मानव स्वतंत्र रहना चाहते हैं। यह उनकी सीखी हुई आदत नहीं बल्कि मौलिक प्रवृत्ति है। संसार में वही जाति स्वतंत्र रह पाती है, जिसमें स्वाभिमान है, जो बिना झुके मुसीबतों की चोट सह लेती है।

टिप्पणी

ऐ देशवासियो! तुम वीरता छोड़कर दूसरों का पैर मत पकड़ो अर्थात् किसी की दासता मत स्वीकारो। कठिनाइयाँ सहते हुए अपनी आन बचाए रखो।

व्याख्या - 5

अब आप इस पाठ के पाँचवें छंद की ओर ध्यान दीजिए –

कवि कहता है कि वह देश जहाँ के लोगों में कठिनाइयों के आने पर उत्साह न जागे, जहाँ छातियाँ संगीनों के वारों से डर जाएँ, जहाँ के नागरिक खून बहाने के बदले आँसू बहाएँ, वे कभी स्वतंत्र नहीं रह सकते।

आगे कवि आह्वान करता कि शेर के अयाल (गर्दन के बाल) पकड़ने का साहस रखो, आँधियों पर सवारी करने का हौसला दिखाओ और किरिचों (घोंपने वाली तलवार या कटार) को अपनी खाल से मढ़ने की निर्भीकता का प्रदर्शन करो। अर्थ हुआ कि साहस, हौसला, चुस्ती-फुर्ती दिखाने के साथ-साथ अपने शरीर का बलिदान करने वाली निर्भीकता ही वीरत्व की पहचान है। जिस देश में ऐसे वीर होंगे वही देश स्वाधीन रह सकता है।

आशय है कि ऐ देशवासियो, तुम शत्रु की गर्दन पकड़कर शत्रुसेना पर टूट पड़ो। इस क्रम में तुम भी क्षत-विक्षत हो सकते हो, मगर इसकी बिल्कुल भी परवाह न करो।

स्वाधीन रहने की कीमत मृत्यु भी हो तो उसका वरण करो।

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।
पकड़ो अयाल, अन्धड़ पर उछल चढ़ो रे!
किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे!

टिप्पणी

1. कवि ने 'आँधियों' का प्रयोग शत्रु सेना के लिए किया है। एक विशाल सेना जो आँधी की भाँति आगे बढ़ी चली आ रही हो। एक वीर उनको देखकर युद्ध के लिए उमंग से भर उठता है।
2. यहाँ 'अन्धड़' शत्रु रूपी आँधी का प्रतीक है।

पाठगत प्रश्न 22.3

नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (√) का चिह्न लगाइए –

1. स्वतंत्र रहना मनुष्य का ------ गुण है।

   (क) भीतरी   (ग) अर्जित

   (ख) बाहरी   (घ) क्षणिक

2. जगत में वह जाति स्वतंत्र कभी नहीं हो सकती जोः

   (क) अन्याय का विरोध करती है और दूसरों के आगे नहीं झुकती।

   (ख) झुककर अन्याय के कोड़े सहती जाती है और कुछ नहीं बोलती।

   (ग) बिना झुके कोड़े सहती जाती है पर अपनी आन को बचाए रखती है।

   (घ) अन्याय सहते हुए आन को बचाने की कोशिश करती है।

3. वीरों में उमंग तब उठती है जब वे–
   (क) आँधियों को आता देखते हैं।
   (ख) शत्रु-सेना को अपनी ओर आते देखते हैं।
   (ग) रक्त की बजाए आँसू बहाते हैं।
   (घ) दुश्मन को पराजित होता देखते हैं।

आइए, अब इस कविता के अंतिम छंद को पढ़िए–

स्वर में पावक यदि नहीं,
वृथा वन्दन है,
वीरता नहीं, तो सभी विनय
क्रन्दन है।
सिर पर जिसके असिघात,
रक्त–चन्दन है,
भ्रामरी उसी का करती
अभिनन्दन है।
दानवी रक्त से सभी पाप
धुलते हैं,
ऊँची मनुष्यता के पथ भी
खुलते हैं।

व्याख्या - 6

कवि वीरों का आह्वान करता हुआ कहता है कि वीर की वाणी में ओज रूपी अग्नि की शक्ति प्रतिध्वनित होनी चाहिए। यदि वाणी में ओज नहीं तो उसकी वंदना व्यर्थ है–अर्थात् उसे वीर कहना शोभा नहीं देता। विनम्रता व्यक्ति का गुण माना जाता है, किंतु कवि के अनुसार विनम्रता के साथ-साथ वीरता अनिवार्य है। केवल विनम्रता के साथ बोलते हुए व्यक्ति की वाणी रुदन करती-सी प्रतीत होती है।

वीर व्यक्ति वही सुंदर लगता है जिसके मस्तक पर शत्रु-प्रहार के चिह्न हों। यह चिह्न उसके मस्तक पर रक्त-रूपी चंदन के समान शोभायमान हो। ऐसे ही वीरों का अभिनंदन होता है। शक्ति की देवी दुर्गा भी ऐसे ही वीरों का अभिनंदन करती है।

अन्यायी शत्रु को मारने से धरती के पाप दूर होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अन्यायी को मारना पुण्य का कार्य है, क्योंकि अन्यायी व्यक्ति अपने जीवन काल में पाप और अपराध कर्म से पूरे वातावरण को दूषित कर देता है, ऐसे व्यक्ति की हत्या से जो खून बहेगा, उसी से उसके द्वारा किए गए पाप धुलेंगे। अतः ऐसे दुश्मनों का संहार करना पुण्य का कार्य है। इसी कार्य से समाज का विकास आदर्श रूप में हो सकेगा। समग्र रूप से कह सकते हैं कि इस कविता के द्वारा कवि वीरता के गुणों का वर्णन करने के साथ-साथ देशवासियों का आह्वान करता है कि वे उन गुणों को अपने में जगाकर तात्कालिक परिस्थितियों से निबटें।

टिप्पणी

1. 'स्वर में पावक होना' पंक्ति द्वारा कवि वाणी में ओजपूर्ण शक्ति की महत्ता सिद्ध करना चाहता है। वीर की वाणी में ओज का स्वर होना आवश्यक है।
2. 'विनय क्रंदन है' विनीत वाणी को कवि विलाप मानता है। वीरता हीन विनय विलापपूर्ण वाणी-सा लगता है।
3. अनाचारी, अन्यायी व्यक्ति को कवि ने दानव की संज्ञा दी है और उनके शरीर से बहा खून दानवी-रक्त है। लोक-प्रचलित मान्यता है कि गंगा-स्नान से सभी पाप धुलते हैं। कवि यर्थाथवादी दृष्टि रखता है, इसलिए उनकी मान्यता है कि समाज के वातावरण को प्रदूषण-रहित–पाप रहित बनाना है, तो इन दानवों का विनाश करना ही उचित है।

टिप्पणी

4. 'ऊँची मनुष्यता के पथ खुलना' से आशय है – समाज को एक आदर्श की ओर ले जाना, जहाँ पाप, अत्याचार, अन्याय न हो। यह तभी संभव है जब समाज के इन दानव रूपी शत्रुओं का संहार हो जाए।
5. 'रक्त-चंदन' में रूपक अलंकार है, क्योंकि माथे पर लगे रक्त को चंदन के रूप में माना गया है।

पाठगत प्रश्न 22.4

सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि ने अनुसार स्वर में पावक होना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि इससे–

   (क) स्वर तेज हो जाता है। (ग) स्वर जलने लगता है।

   (ख) स्वर में ओज आ जाता है। (घ) स्वर में कर्कशता आ जाती है।

2. मस्तक पर रक्त रूपी चंदन उन्हीं को शोभित होता है, जो–

   (क) वीरता पूर्वक युद्ध करते हैं। (ग) भैरव के पूजक हैं।

   (ख) शक्ति के उपासक हैं। (घ) युद्ध में पराजित होते हैं।

22.4 भाव तथा शिल्प सौंदर्य

'परशुराम का उपदेश' शीर्षक कविता उन्होंने राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन के समय उत्पन्न हुए मानसिक दबाव में लिखी।

दिनकर अपने विशिष्ट काव्य-प्रयोगों से भाषा को लाक्षणिक बनाने में सिद्धहस्त हैं। वे ऐसे प्रयोगों की झड़ी लगा देते हैं, जैसे – सत्य का राख में सना होना, बाँहों की विभा सँभालना, चट्टानों की छाती से दूध निकालना, चंद्रमाओं को पकड़ कर निचोड़ना आदि।

किंतु ये प्रयोग मात्र चमत्कार पैदा करने के उद्देश्य से नहीं होते, बल्कि इससे भाषा और भावों की सामर्थ्य बढ़ जाती है।

वीरता और देशप्रेम दिनकर के काव्य का मूल स्वर है। प्रस्तुत रचना में दोनों का सुंदर समन्वय हुआ है। प्रत्येक पंक्ति प्रेरणा और उमंग से परिपूर्ण है, जैसे–

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं।
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।

दिनकर की कविताओं में भाषा का सुंदर प्रयोग मिलता है। भावानुरूप भाषा उनके संकेतों पर चलती दिखाई देती है। भाषा के तत्सम रूप के प्रयोग में वे अग्रणी दिखाई देते हैं; जैसे-ऋत, दाहक, गर्जन, वर्जन, विभा, शिला, पीयूष, व्योम आदि।

कविता की लयात्मकता और गत्यात्मकता सराहनीय है, जिससे कविता के वाचन में अद्भुत आनंद आता है।

कविता की निम्नलिखित पंक्तियों पर ध्यान दीजिए, इनमें कवि ने लाक्षणिक प्रयोग किए हैं–

(क) जिनमें दाहकता नहीं न तो गर्जन है:

(ख) वैराग्य छोड़ बाहों की विभा संभालो:

(ग) किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे !

22.5 आइए, स्वयं पढ़ें

दिनकर की कविता को पढ़ने के बाद आपने जाना कि राष्ट्र की रक्षा, देश की रक्षा हमारा परम कर्त्तव्य है। हमारी पहचान हमारे देश से है। जब तक हम वीरव्रत का पालन नहीं करेंगे, दुश्मन हमारे ऊपर अत्याचार करते रहेंगे। इतिहास की पुस्तकों में आपने पढ़ा भी होगा कि किस तरह विदेशी आक्रांता समय-समय पर हमारे देश पर हमले करते रहे, अत्याचार करते रहे, देश की संपत्ति लूटते रहे। अगर हम कायर बने रहते, संन्यासियों की तरह हाथ पर हाथ धरे सब कुछ नियति पर छोड़ देते तो शायद आज भी हमारा देश गुलाम होता। आइए, दिनकर जैसे भाव-बोध वाली बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की एक कविता पढ़ते हैं :

क्या गणना है कितनी लंबी
हम सबकी इतिहास – लड़ी?
हमें गर्व है कि है बहुत ही
गहरे अपनी नींव पड़ी।
हमने बहुत बार सिरजी हैं
कई क्रांतियाँ बड़ी-बड़ी
इतिहासों ने किया सदा ही
अतिशय मान हमारा है।

है आसन्न-भूत अति उज्ज्वल
है अतीत गौरवशाली
औ छिटकी है वर्तमान पर
बलि के शोणित की लाली
नव उषा-सी विजय हमारी
विहँस रही है मतवाली
हम मानव को मुक्त करेंगे
यही विधान हमारा है।

इस काव्यांश को पढ़ने के बाद आप तो समझ ही गए होंगे कि कवि किसके बारे में कह रहा है? कवि का यहाँ इतिहास-लड़ी से क्या आशय है? गहरी नींव की बात कह कर वह किस बात की ओर इशारा करना चाहता है? क्रांतियाँ सिरजने का तात्पर्य क्या है? अतीत के गौरवशाली होने और भविष्य के उज्ज्वल होने की उम्मीद उसे क्यों दिखाई दे रही है? बलि के शोणित की लाली और विजय को उषा-सी कहने के पीछे कवि का क्या तात्पर्य है? मानव को मुक्त करने के विधान से उसका क्या अभिप्राय है?

पाठगत प्रश्न 22.5

उम्मीद है, आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ लिए होंगे, पूरे काव्यांश को एक बार फिर पढ़ जाइए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'आसन्न-भूत' से कवि का तात्पर्य है :

   (क) बीत चुका समय　　(ग) कभी न आने वाला समय

   (ख) आने वाला समय　　(घ) डरावना समय

2. 'नव उषा–सी विजय हमारी' का अर्थ है:

   (क) सुबह का समय　　(ग) आजादी मिलना

   (ख) शाम ढलने का वक्त　　(घ) लड़ाई का रुक जाना

3. कवि को किस बात का गर्व है?

22.6 आपने क्या सीखा

1. कवि ने 'परशुराम का उपदेश' कविता द्वारा देशवासियों में ओज और वीरता का भाव भरा है।

2. इस कविता का मूलभाव है – अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाना मानव का धर्म है। अत्याचार और अन्याय सहना कायरों का काम है। मानव को प्रकृति से अनेक नैसर्गिक शक्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनकी पहचान हो जाने पर उसकी भुजाओं में अत्यधिक बल आ जाता है कि एक–एक वीर सैकड़ों को परास्त कर पाता है। अब समय आ गया है कि प्रत्येक भारतवासी अपनी शक्ति को पहचाने और एक जुट होकर शत्रु पर टूट पड़े। इसलिए, कवि देशवासियों से कहता है – 'बाहों की विभा सँभालो।'

3. कविता में स्थान-स्थान पर अलंकारों, लाक्षणिक प्रयोगों और प्रतीकों के प्रयोग से कवि ने काव्य-सौंदर्य को बखूबी उभारा है।

22.7 योग्यता विस्तार

(क) कवि परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर का' जन्म 1908 ई0 में सिमरिया, ज़िला मुंगेर में हुआ। आपने बी. ए. तक पटना विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और सीतामढ़ी में सब-रजिस्ट्रार पद पर कार्य प्रारंभ किया। आप राज्य सभा के सदस्य (1952–1964) भागलपुर विश्व विद्यालय के कुलपति (1964–1965) और भारत सरकार में हिंदी सलाहकार (1965–1971) के पद पर भी कार्यरत रहे। आपकी लगभग 50 कृतियाँ प्रकाशित हैं।

हिंदी काव्य-जगत पर छाए छायावादी प्रभाव को काटने वाली शक्तियों में दिनकर की प्रवाहमयी ओजस्विनी कविता का स्थान विशिष्ट महत्त्व रखता है। वे छायावाद के कल्पनाजन्य निर्विकार मानव के खोखलेपन से परिचित हो चुके थे और उसे अपनी रचनाओं से खंडित करना चाहते थे। आपके प्रमुख प्रबंध-काव्यों में कुरुक्षेत्र (1946), रश्मिरथी और उर्वशी (1961 ई0) शामिल हैं।

आपकी गद्य रचनाओं में 'संस्कृति के चार अध्याय' प्रमुख है। इसके अतिरिक्त आपने मिट्टी की ओर, काव्य की भूमिका; पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त, शुद्ध कविता की खोज आदि अनेक समीक्षात्मक निबंध भी लिखे हैं। आपका देहावसान सन् 1974 में हुआ।

(ख) आपका मित्र जो खेल में हार गया है और बहुत निराश है, उसे पठित कविता से कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए पत्र लिखिए।

22.8 पाठांत प्रश्न

1. कवि देशवासियों को योगी के स्थान पर विजयी बनने का संदेश क्यों दे रहा है? योगी और विजयी की पाँच-पाँच विशेषताएँ बताइए।
2. सूर्य की किरणें हमें किस प्रकार शक्ति देती हैं?
3. कविता में अनेक स्थानों पर लाक्षणिक प्रयोग हुआ है, ऐसी चार पंक्तियों का उल्लेख कीजिए।
4. दानवी-रक्त से पाप धुलने की कल्पना कवि ने क्यों की है?
5. निम्नलिखित अंश की व्याख्या कीजिए–

   छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,
   मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।
   दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है,
   मरता है जो, एक ही बार मरता है।

तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

6. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

लड़कर अभाव के पतझड़ से
नव-सर्जन-रण में विजयी बन,
सुख सुविधा रस के सम-वितरण
का पा नवयौवन-मय जीवन,
हर मनुज-कुसुम संतोषीमय
मुस्कान मधुर बरसाएगा।
ऐसा वसंत कब आएगा?

(क) इस कविता का मूल आशय क्या है?

(ख) 'सुख सुविधा रस के सम-वितरण' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ग) 'अभाव' से लड़ने और सर्जन-रण में विजयी होने से कवि का क्या आशय है?

(घ) 'मनुज-कुसुम संतोषीमय' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

22.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. हलचल भरे जीवन
2. राख में दबे, सूखे, पुराने
3. स्वतंत्र रहने की छटपटाहट ही व्यक्ति को स्वाभिमानी बनाती है। दासता को ठुकराती है।
4. वीर के माथे पर तलवार के घाव का तिलक हो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1	1. (क)	2. (ग)	3. (ग)
22.2	1. (ग)	2. (ख)	3. (ग)
22.3	1. (क)	2. (ख)	3. (ख)
22.4	1. (ख)	2. (क)	
22.5	1. (ख)	2. (ग)	3. गौरवशाली अतीत होने पर